Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

38

समकालीन प्रमुख साहित्यकारक संग तुलनात्मक दृष्टि (डॉ. भीमनाथ झा)

डॉ. उमाकान्त झा
पर्यवेक्षक पूर्व प्राचार्य
के. एस. आर. कॉलेज सरायरंजन (समस्तीपुर)

विनोद कुमार
शोधार्थी
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय दरभंगा

विगत पचास -साठि वर्षक कालखण्ड मैथिली साहित्यक लेखन आ ‘ भाषा आन्दोलनक कारणे अत्यन्त महत्वपूर्ण रहल अछि । एक दिस एकरा राजकमल ‘ललित ‘ मायानन्द ,राजमोहन झा , प्रभास कुमार चौधरी , रामदेव झा , हंसराज , उग्रानन्द , गंगेश गुंजन , लिलीरे , विभा रानी , शेफालिका वर्मा सदृश रचनाकार प्राप्त छैक , तँ दोसर दिस बाबु साहेब चौधरी , बैद्यनाथ चौधरी ‘ बैजू ‘ , ताराकान्त झा सन आन्दोलनी नक्षत्र भेलाह । इएह मुख्य कारण थिक जे मैथिलीकेँ अन्तत : संवैधानिक भाषा मानल गेल तथा केन्द्रीय ओ प्रान्तीय सेवा आयोगमे मैथिलीक महत्व बढ़ि सकल । एहि कालखण्डमे अत्यन्त विशिष्ट साहित्यकार भेलाह - भीमनाथ झा ।

डॉ० भीमनाथ झा जहिना विशिष्ट कवि , तहिना विवेकी समालोचक । ई जहिना तीक्ष्ण व्यंग्यकार , तहिना मनमोहक संस्मरण लेखक छथि I चलैत - फिरैत विश्वकोशक रुपमे हिनक प्रसिद्धि छनि , विद्वान वक्ता आ ‘ प्रखर प्रवक्ता छथि । भाषा -भावक गरिमासँ युक्त भीमनाथ झा मैथिली भाषा - साहित्यक अमूल्य धरोहर छथि , जनिक सक्रियता एखनहूँमैथिलीकेँ आलोकमय आ ‘ दीप्तिमान बनौने छथि I

डॉ० भीमनाथ झाक साहित्यिक उपलब्धिक प्रसंग कुलानन्द मिश्रक कथन अक्षरश: सत्य अछि — “ भीमनाथ झाक कवि आन्दोलित चित्त होइतो भविष्यक सपना आस्थापूर्ण प्रकृतस्थ भाव संग देखि पबैत छनि आ ‘ ई तथ्य कोनो रचनाकारक रचनात्मक अस्मिता लेल संजीवनीक काज करैछ । भीमनाथ झाक रचनाकारक शब्द - शक्ति , जाहिमे अपण्डित आभिजात्य आ ‘ अग्राम्य ठेंठपनाक कौशलपूर्ण संयोग भेटैछ , हिनक कविताक सहज आ ‘ सोझ अभिव्यक्ति तथा अविलम्बित संप्रेषणीयतामे सर्वाधिक योगदान करैछ I हिनक कवि अपन अभिव्यक्ति लेल शब्दक तूलिकासँ स्पन्दनहीन माध्यमक अमूर्त रेखांकन नहि करैत छनि , ओ स्पष्ट आ ‘ स्पन्दित माध्यमक मूर्त्त चित्रांकन द्वारा अपन बात पहूँचयबामे विश्वास करैत अयलनि अछि ।

शब्दक माध्यमसँ भावक विन्यस्त अभिव्यक्ति मे कोनो रचनाकारक शिल्प - सौन्दर्य आ ‘ रचनात्मक सिद्धिकेँ परखल जाइछ I हम मानैत छी जे दृष्टिसँ मैथिलीक आधुनिक कविगण मध्य भीमनाथ झाक जोड़ी विरल थिक । हिनक रचनाकारक ग्रामभिमुखता हिनक पछूआयल डेगक इतिवृति नहि भ ‘ अपन माटिक प्रति हिनक सहज आ ‘ आत्मीय सम्पृक्तिक दस्तावेज़ थिक आ ‘ ई सन्तोषक गप्प अछि जे ई सम्पृक्ति कतहुसँ ‘ रोमान्टिक ‘ कि तात्कालिक उद्धेश्य विशेषक सिद्धि लेल अवधारल नहि थिक । अपन माटिक प्रति स्निग्ध ममतासँ तीतल ई कवि अपन कथ्य अभिव्यक्ति तथा भाषा - संवेदना संग मैथिली कविताक जातीयताकेँ ‘ स्केच पेन ‘ सँ रेखांकित करबामे स्पृहणीय दंगसँ सफल भेल छथि । … ” 01

डॉ० भीमनाथ झा अपन समकालीन साहित्यकारक मध्य अत्यधिक लोकप्रिय छथि। हिनक पत्रकारिताक प्रसंग छत्रानन्द लिखने छथि जे भीमनाथ झा अजातशत्रु छथि संगहि आशु कवि । गम्भीर सँ गम्भीर विषय पर हिनक विचार सहज बोधगम्य रहैत छनि। पंचानन मिश्र हिनका मैथिली काव्यमंचक ओजपूर्ण काव्यपाठक यशस्वी कवि मानैत छथि I समकालीन साहित्यकारक बीच भीमनाथ झा मैथिलीक साहित्यिक विचार -विमर्श तथा भाषा आन्दोलनसँ सम्बद्ध आयोजनमे संतुलित , शिष्ट आ ‘ सटीक विचार व्यक्त कयनिहार अद्भुत क्षमतावान व्यक्तित्व छथि I साहित्यक विभिन्न विधामे तल्लीन रहितहूँ मैथिलीक प्रति ई सदैव चिन्तित रहैत छथि। अपन समवर्ती आ ‘ अनुवर्ती बहुतो साहित्यकारकेँ भीमनाथ झा उत्प्रेरित करैत छथि आ ‘ हिनक एहि प्रकारक प्रतिभा दिनानुदिन पल्लवित -पुष्पित भ ‘ रहल अछि ।

समकालीन साहित्यकारक बीच डॉ० भीमनाथ झाक काव्य - समूहमे व्यंग्य काव्य बेसी चमत्कारी , प्रभावोत्पादक रहैत छनि I हिनक व्यंग्य - काव्यमे प्रखर प्रहार सामाजिक , राजनितिक ओ सांस्कृतिक – तीनू पक्षक कुरूपता , विसंगति आ ‘ विरूपतापर रहैछ I काव्यात्मकता, भाषाक प्रांजलता आ ‘ठेंठ शब्दावलीक प्रयोग अत्यधिक मार्मिक ओ प्रभावशाली रहैत छनि I काव्य -रचनामे प्रत्युत्पन्नमतित्वक विलक्षणता अनुकरणीय छनि ‘ मिथिला मिहिर ‘क सम्पादन - कार्यसँ पटनामे एक दशक धरि डॉ० भीमनाथ झाक सक्रियता हिनका लेल सर्वाधिक महत्वपूर्ण छल , कारण ओहि समयक स्थापित साहित्यकारक सान्निध्य हिनका लोकप्रियता प्रदान कयलक I कार्य करबाक क्षमता, सक्रिय सहयोगक भावना, साहित्यिक ओ संगठनात्मक अभिरुचि , सुमधुर ओ शालीन व्यवहार भीमनाथ झाक वैशिष्ट्य छनि ।

दरभंगामे आचार्य सुरेन्द्र झा ‘ सुमन ‘ क सान्ध्य गोष्ठी डॉ० भीमनाथ झाक लेल साहित्यिक प्रेरणाक स्रोत रहनि I एतय तत्कालीन विशिष्ट साहित्यकार प० चन्द्रनाथ मिश्र ‘ अमर ‘, डॉ० सुरेश्वर झा , डॉ० रामदेव झा , रमानाथ मिश्र ‘ मिहिर ‘ आदिक संग आचार्य ‘ सुमन ‘क

©Copyright 2024 *ADRJ*. All Rights Reserved

Akshardhara Research Journal
Single Blind Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal
E ISSN -3048-8095 / Bimonthly / SJIF Impact- 3.4/ November- December 2025 / VOL-02 ISSUE-III

सान्निध्य हिनक सफलताक आ ‘ सारस्वत साधनाक मूल कारण छल I एहिना दरभंगाक ‘ जखन- तखन ‘ साहित्यिक संस्थाक ई संरक्षक छथि आ ‘ एहि संस्था द्वारा हिनका ‘ भाव - भूमि रस्वन्त ‘ (भीमनाथ झाक समग्र मूल्यांकन) 2011 ई० मे समर्पित कयल गेल।

‘ भाव- भूमि रसवन्त ‘ डॉ० भीमनाथ झाक समग्र मूल्यांकन थिक , हिनक अभिनन्दन ग्रंथ थिक ।एकर सम्पादक विभूति आनन्द आ ‘ प्रो० अशोक कुमार मेहता छथि ।एहि ग्रंथमे हिनक व्यक्तित्वकेँ तीन रूपेँ देखल गेल - विषयक दृष्टिएँ , साहित्यकारक दृष्टिएँ तथा पारिवारिक दृष्टिएँ I एहि खण्डमे कुल बाइस गोट आलेख संकलित छनि ।एहिना हिनक कृतित्वकेँ पुस्तक केन्द्रित आ ‘ विद्या केन्द्रित रुपमे विभाजित कय अड़तालीस गोट आलेखक समावेश भेल । ‘ भाव - भूमि रसवन्त ‘ वस्तुतः डॉ० भीमनाथ झाक मूल्यांकन ग्रंथ थिक जे हिनका चूड़ान्त कवि , निविष्ट समीक्षा आ ‘ व्यवहार कुशल प्रमाणित करैछ।

डॉ० भीमनाथ झा केँ प्रतिभाक अजस्त स्रोत मानैत हिनक मित्र ओ समकालीन साहित्यकार डॉ० देवेन्द्र झा लिखने छथि —-- “ हरिमोहन बाबू रहथु कि सुमनजी , मधुपजी रहथु की यात्रीजी , आरसी प्रसाद सिंह रहथु की मणिपद्म , व्यासजी रहथु की शेखरजी , राजेश्वर झा रहथु की ‘ मोहन ‘ , किरणजी रहथु की प्रभासजी , बबुआजी झा ‘ अज्ञात ‘ रहथु की बैद्यनाथ मल्लिक ‘विधु ‘ – सभ स्नेहे भाजन ई रहलाह अछि , समकालीन साहित्यकार लोकनिक तँ गप्पे नहि हो । कवि सम्मेलन रहओ की विचार गोष्ठी ,पत्र - पत्रिका रहओ की नव -नव पोथीक प्रकाशन , भूमिका रहओ की सम्मति , सर्वत्र प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रुपमे ई रहितहिँ छथि ।”

सन्दर्भ संकेत

1. झा भीमनाथ , 1997 ई० - नाम तँ थिक वैह ,उमापति पुस्तकालय , कोइलख (मधुबनी) अन्तिम कभर पेज .
2. आनन्द विभूति , मेहता अशोक कुमार (सम्पादक) 2011 ई० - भाव -भूमि रसवन्त , जखन -तखन प्रकाशन , दरभंगा ,पृष्ठ -115
3. झा भीमनाथ ,2016 ई० – मन आङन मे ठाठ , किसुन संकल्प लोक , सुपौल , पृष्ठ - 312 - 315